संसार-सागर को; **श्रुतिपरायणाः**=सुनने के परायण मनुष्य।

अनुवाद

ऐसे भी हैं, जो स्वयं इस ज्ञान को नहीं जानते, परन्तु दूसरों से सुनकर ही परमपुरुष श्रीभगवान् की भक्ति में तत्पर हो जाते हैं। ये आचार्यों का श्रवण करने के परायण मनुष्य भी जन्म-मृत्यु के सागर से तर जाते हैं।।२६।।

तात्पर्य

यह श्लोक आधुनिक समाज पर विशेष रूप से घटता है। आज के समाज में ज्ञान की शिक्षा का बिल्कुल अभाव-सा हो रहा है। कुछ मनुष्य अनीश्वरवादी प्रतीत होते हैं तो कुछ अज्ञेयतावादी और कुछ दार्शनिक हैं। परन्तु वास्तव में देखा जाय तो दर्शन (तत्त्व) का ज्ञान किसी को भी नहीं है। जहाँ तक किसी साधारण मनुष्य का प्रश्न है, यदि वह पुण्यात्मा है तो श्रवण के द्वारा पारमार्थिक उन्नति कर सकता है। अतएव श्रवण-पद्धति की बड़ी महिमा है। आधुनिक जगत् में कृष्णभावना के प्रवर्तक श्रीचैतन्य महाप्रभु ने श्रवण-भक्ति को बड़ा महत्त्व दिया है। उनके अनुसार यदि साधारण मनुष्य प्रामाणिक आचार्यों से कथा का और विशेष रूप से **हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे, हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे** महामन्त्र के दिव्य कीर्तन का श्रवण करे, तो वह पारमार्थिक उन्नति कर सकता है। अतएव परामर्श है कि सभी मनुष्य भगवत्प्राप्त महापुरुषों से कथा-श्रवण करें और इस प्रकार शनैः-शनैः पूर्ण ज्ञान की अवस्था को प्राप्त हो जाएँ। ऐसे में श्रीभगवान् की उपासना अवश्य होगी। श्रीचैतन्य महाप्रभु का उपदेश है कि इस युग में किसी के लिए अपने आश्रम-धर्म को बदलना आवश्यक नहीं, परमसत्य को मनोधर्म से जानने के प्रयास को त्यागने की ही आवश्यकता है। जो भगवत्-तत्त्व को जानते हों, उनका दास बनने का यत्न करना चाहिए। यदि किसी को सौभाग्यवश शुद्धभक्त का पादाश्रय प्राप्त हो जाता है तथा उन महापुरुष से स्वरूप-साक्षात्कार के साधन का श्रवण कर वह भी उनके चरणचिह्नों का अनुसरण करने लगता है, तो इसमें सन्देह नहीं कि यथासमय वह स्वयं भी शुद्धभक्त बन जायगा। इस श्लोक में श्रवण-भक्ति के माहात्म्य का विशेष रूप से उल्लेख है और यह सब प्रकार से ठीक भी है। साधारण मनुष्य दार्शनिक कहलाने वाले मनोधर्मियों के समान योग्य नहीं समझा जाता; किन्तु प्रामाणिक पुरुष के मुख से कथा को सुनकर वह इस भवसागर से सुगमतापूर्वक पार होकर अपने घर, भगवान् के पास लौट सकता है।

यावत्संजायते किंचित्सत्त्वं स्थावरजंगमम्।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्तद्विद्धि भरतर्षभ।।२७।।

यावत्=जो; **संजायते**=उत्पन्न होता है; **किंचित्**=कुछ भी; **सत्त्वम्**=पदार्थ (वस्तु); **स्थावर**=अचर; **जंगमम्**=चर; **क्षेत्र**=देह; **क्षेत्रज्ञ**=देही के; **संयोगात्**=संयोग से; **तत् विद्धि**=वह जान; **भरतर्षभ**=हे भरतवंश में श्रेष्ठ (अर्जुन)।